(3) दोनो संगीत पद्धति मे स्वर के साथ-साथ लय और ताल का महत्वपूर्ण स्थान है।

(4) दोनो पद्धति मे कुछ ताल भी समान है। होते

(5) जिस प्रकार उत्तर भारतीय संगीत मे ताल हेतु सम्पूर्ण विभाग के प्रथम मात्रा पर ताली या खाली को दिखाई जाती है उसी प्रकार कर्नाटक संगीत मे भी विभाग की प्रथम की प्रथम मात्रा पर ताली दिया जाता है।

(6) दोनो संगीत पद्धति मे कुछ राग भी स्वर के लिहाज से समान है जैसे - राग - मालकौंस - हिन्दोलम, दुर्गा - शुद्ध सावेरि, बिलावल - धीर शंकराभरणम, भैरवी - हनुमततोड़ी। कुछ राग नाम के दृष्टि से भी समान है। जैसे — श्री, मोहनी, केदार

(7) दोनो पद्धति मे गायक को अपनी कल्पना से गाने की स्वतन्त्रता रहती है, लेकिन आधार विचार का अन्तर होने के कारण कल्पना करने का ढंग पृथक है।

विभिन्नता —

(1) यद्यपि दोनो पद्धति मे 12 स्वर होते है फिर भी कुछ स्वरों के नाम अलग-अलग है, जैसे उत्तर भारतीय संगीत के कोमल रिषभ और कोमल धैवत दक्षिण भारतीय संगीत के शुद्ध रिषभ तथा शुद्ध धैवत है।

(2) उत्तर भारतीय संगीत मे शुद्ध स्वर के नीचे कोमल स्वर होते है जबकि दक्षिणी संगीत मे